B.M.A COLLEGE , BAHERI,DARBHANGA
(A CONSTITUENT UNIT OF LNMU)
BA DEGREE-1
HISTORY HONS.
PAPER-1
UNIT-5(IV)
DEPARTMENT OF HISTORY
PANKAJ KUMAR MISHRA
DATE-18/09/2020

TOPIC:- प्राचीन भारतीय संस्कृति

PART-1

Scanned with CamScanner

प्राचीन भारतीय संस्कृति, भाग-1

हड़प्पा की संस्कृति

चित्रकला – चित्रकला का प्रमाण हमें उनके मोहरों और मृद्भांडों से प्राप्त होता है। इनसे देवी-देवताओं, पशु-पक्षियों, उपकरणों, वनस्पतियों आदि का प्रमाण मिलता है। इस आधार पर इनकी कलात्मकता के साथ ही रंगों और इसके रंजन की जानकारी भी मिलती है।

मूर्तिकला – यहाँ से तीन स्तरीय मूर्तियाँ मिली हैं – (1) मिट्टी की बनी मूर्ति – बेडौल
(2) पत्थर की बनी मूर्ति – कलात्मक दृष्टि से उन्नत है।

(3) धातु निर्मित मूर्तियाँ। इसके तहत ताम्र एवं कांस्य दोनों तरह की मूर्तियाँ पर्याप्त मात्रा में बनी थीं। इनमें कांस्य की बनी मोहनजोदड़ो की नर्तकी की मूर्ति सबसे अधिक उल्लेखनीय है, जो लुप्त मोम प्रणाली के तहत बनी थी।

स्थापत्य – स्थापत्य के तहत हड़प्पाइयों की निम्न बातें स्मरणीय हैं –

(A.) दुर्गीकरण
(B.) ऊँचे चबूतरों पर भवन का निर्माण
(C.) बहुमंजली इमारत
(D.) भवन की दृढ़ता पर विशेष बल,
(E.) जलाव पर पूरा ध्यान
(F.) पक्की ईंटों का प्रयोग
(G.) स्वच्छता पर विशेष ध्यान
(H.) निर्माण की शैली में श्रृंखलाबद्ध प्रणाली अपनायी गयी है,
(I) सामग्री के स्तर पर लकड़ियों का विशेष उपयोग
(J.) कई स्थानों पर पत्थरों का पर्याप्त उपयोग हुआ है।

मोटे तौर पर हड़प्पाइयों की सामान्य दृष्टि उपयोगितावादी थी और इसलिए उन्होंने अपने भवन निर्माण में भी इसी दृष्टि का परिचय दिया। इनका भवन एक प्रांगण के चारों ओर कमरों के निर्माण की योजना के तहत बनता था। द्वार मुख्य मार्ग से अलग गली की ओर होता था। कमरे का द्वार किनारे में होता था। मकान के किनारे L आकार का ईंट प्रयोग में लाया जाता था। रसोई एवं स्नान का इंतजाम अलग से किनारे में होता था। जल निकासी की व्यवस्था थी, जिसके तहत घर से नाली

का पानी मुख्य नाली में जाता था। जल निकासी की उनकी व्यवस्था सर्वोत्तम थी।

Pankaj
18/09/2020

Scanned with CamScanner